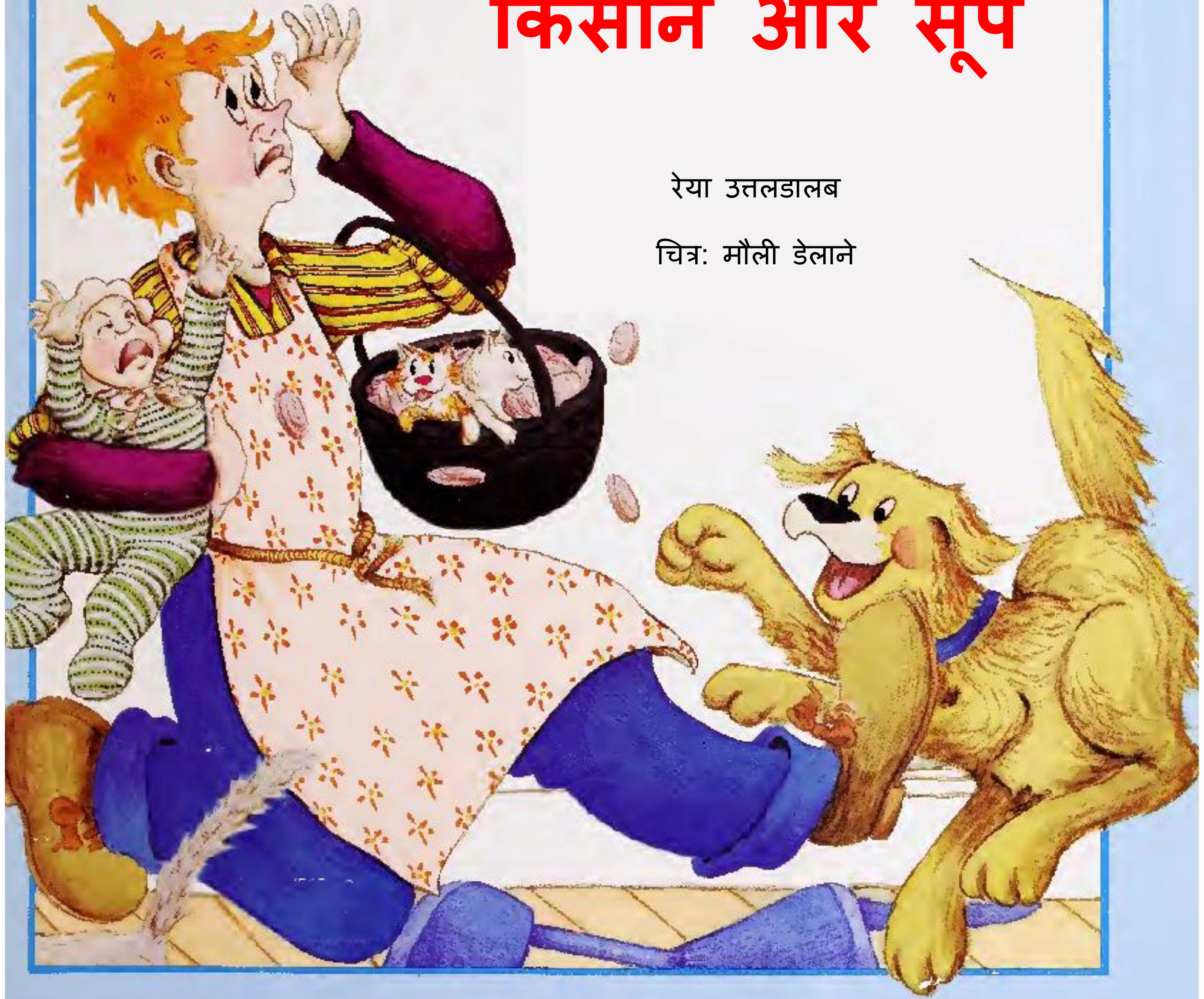
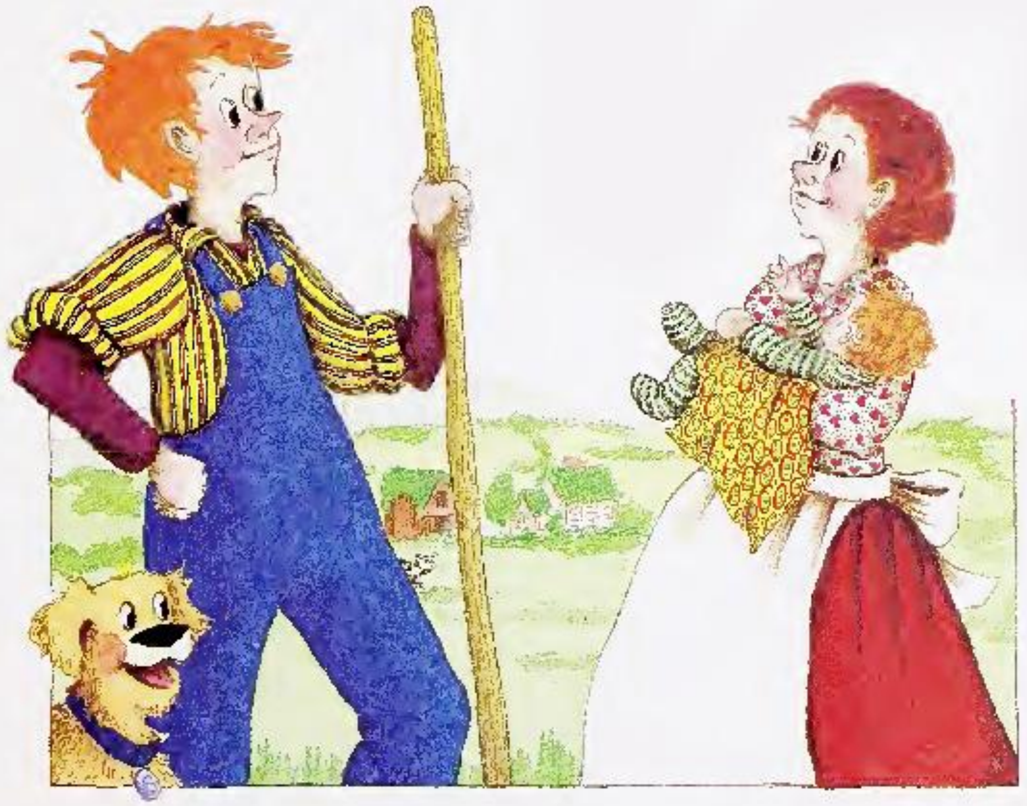
किसान और सूप

रेया उत्तलडालब

चित्र: मौली डेलाने

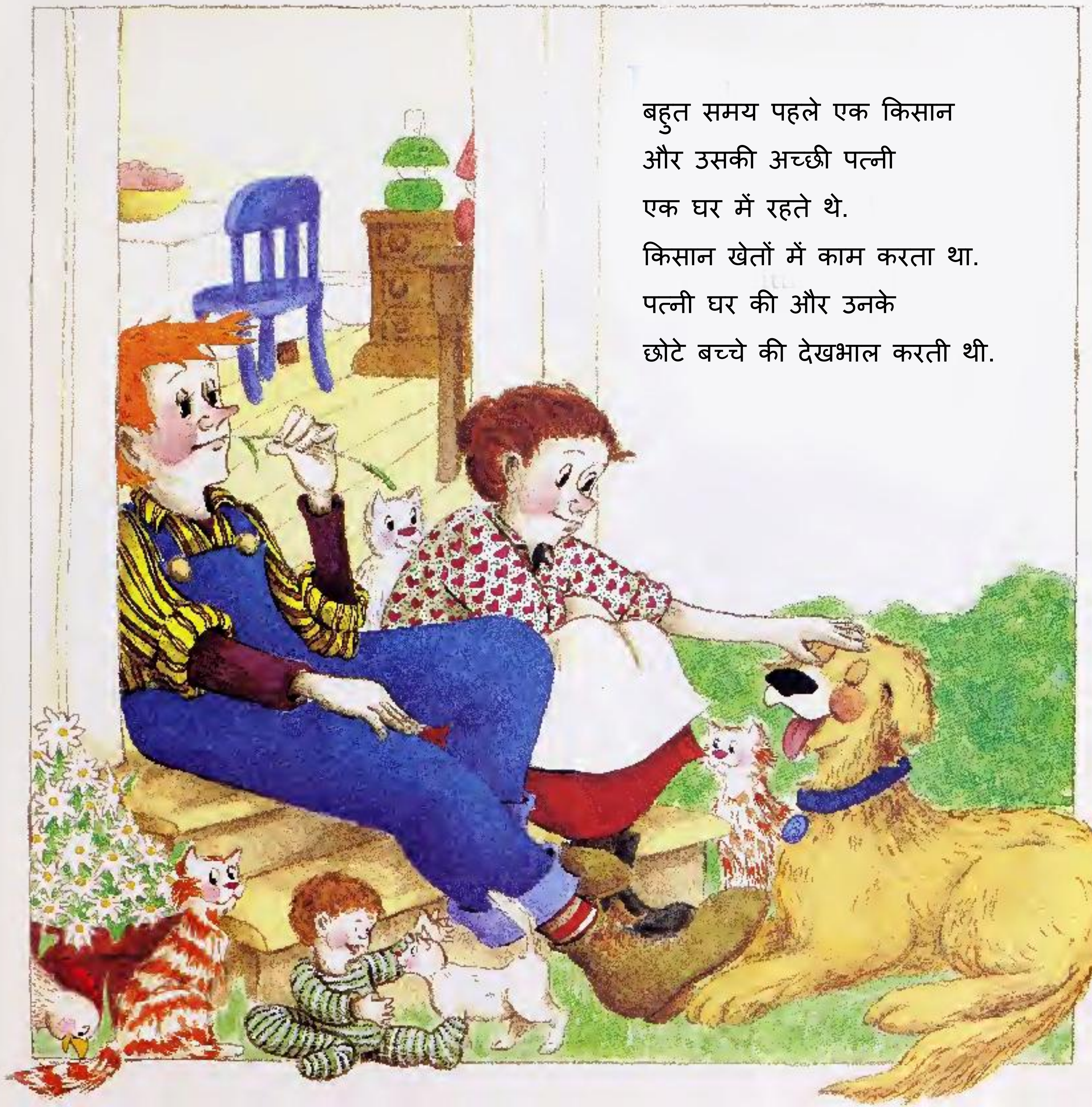


किसान और सूप



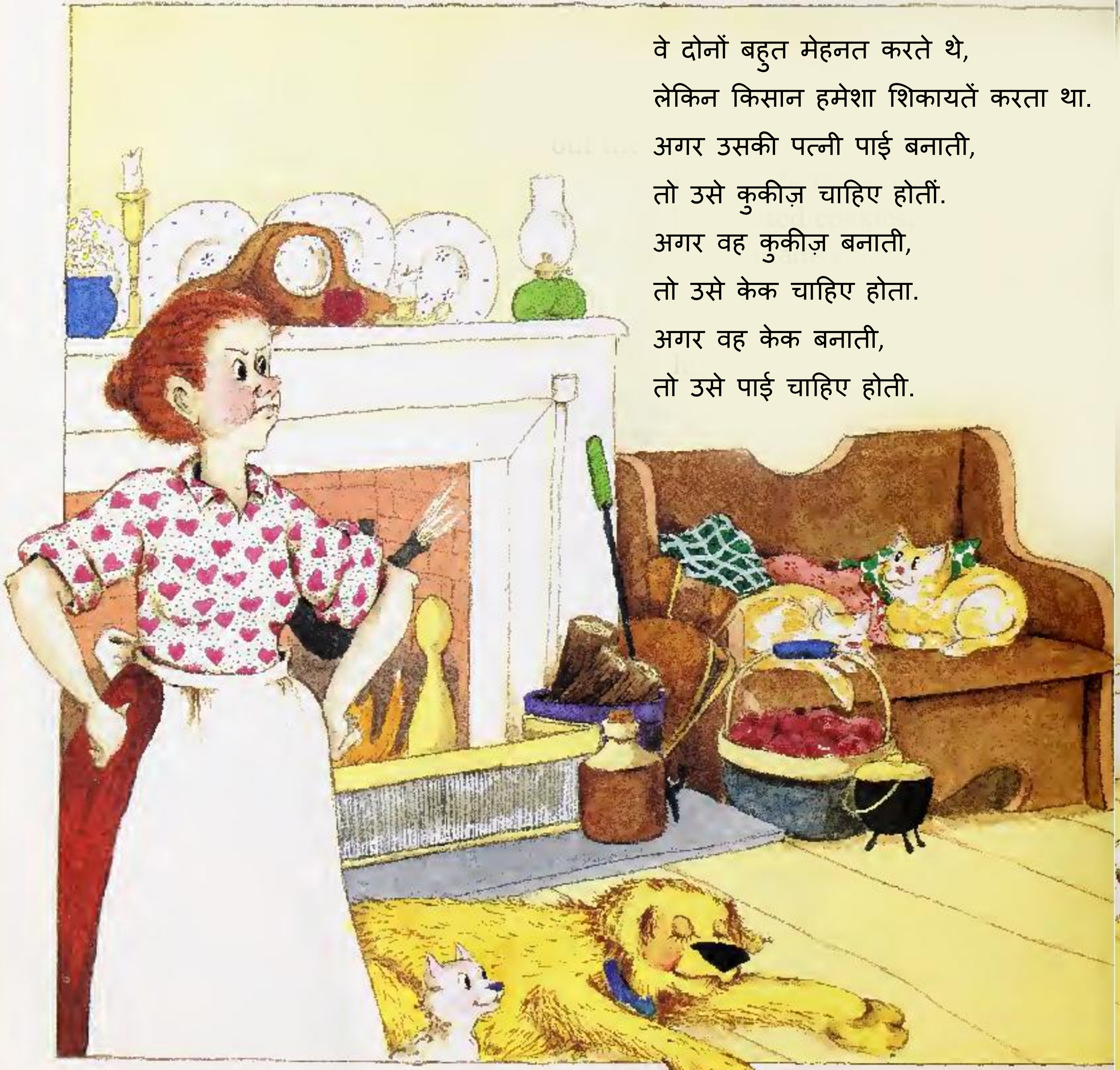
रेया उत्तलडालब

चित्र: मौली डेलाने



बहुत समय पहले एक किसान
और उसकी अच्छी पत्नी
एक घर में रहते थे.
किसान खेतों में काम करता था.
पत्नी घर की और उनके
छोटे बच्चे की देखभाल करती थी.

वे दोनों बहुत मेहनत करते थे,
लेकिन किसान हमेशा शिकायतें करता था.
अगर उसकी पत्नी पाई बनाती,
तो उसे कुकीज़ चाहिए होतीं.
अगर वह कुकीज़ बनाती,
तो उसे केक चाहिए होता.
अगर वह केक बनाती,
तो उसे पाई चाहिए होती.



"तुम जो भी करती हो,
वह कभी ठीक नहीं होता है," किसान ने शिकायत की.
"मैं हर दिन धूप में खड़ा खेत में कड़ी मेहनत करता हूँ.
तुम बस यहाँ ठंडक में सिर्फ घर की देखभाल करती हो.
घर के काम में भला क्या रखा है."



"हम्म्म्म," उसकी पत्नी ने कहा.
"फिर हम क्यों न अपने काम की अदला-बदली करें?
कल से मैं खेत में काम करूँगी.
और तुम बस यहीं रहना और घर की देखभाल करना."



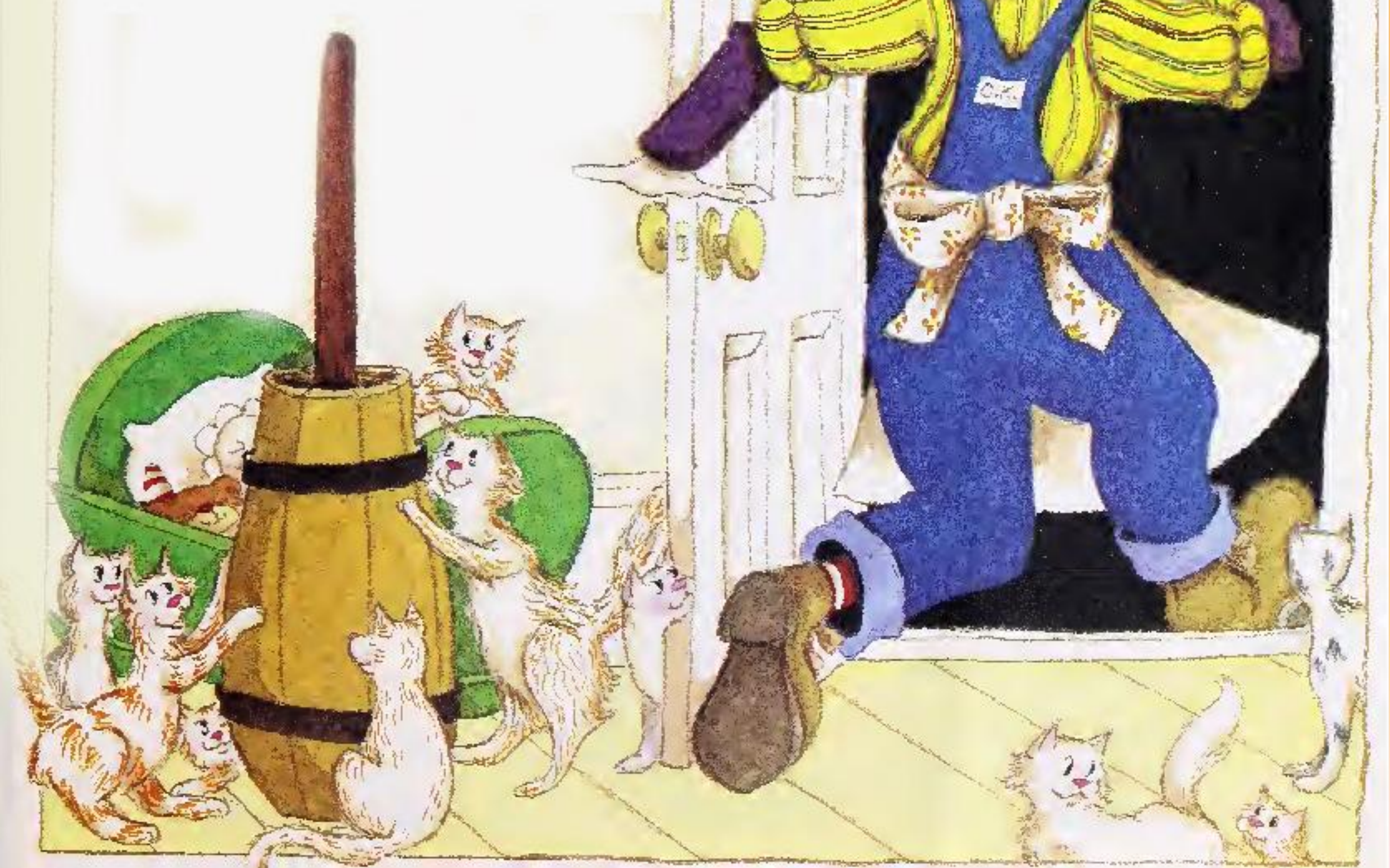
"ठीक है, इस काम में तो कुछ भी नहीं है,"
किसान ने कहा.

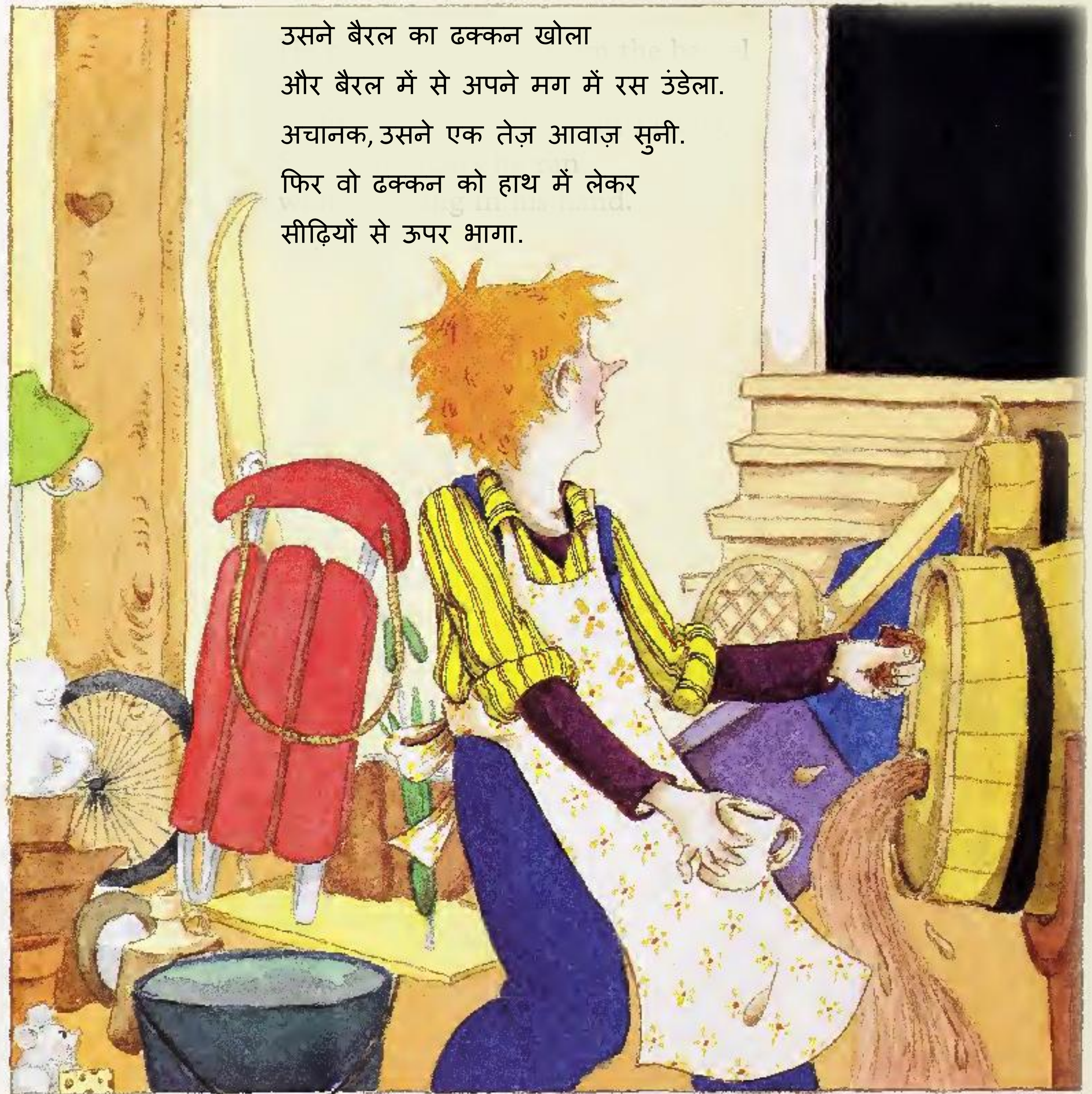


फिर अगली सुबह उसकी पत्नी
घास काटने के लिए खेत में गई.
और किसान ने मक्खन बनाने के लिए
मलाई को मथना शुरू किया.
बच्चा पालने में सो रहा था.
बिल्लियाँ उसके बगल में सो रही थीं,
और किसान काफी खुश था.

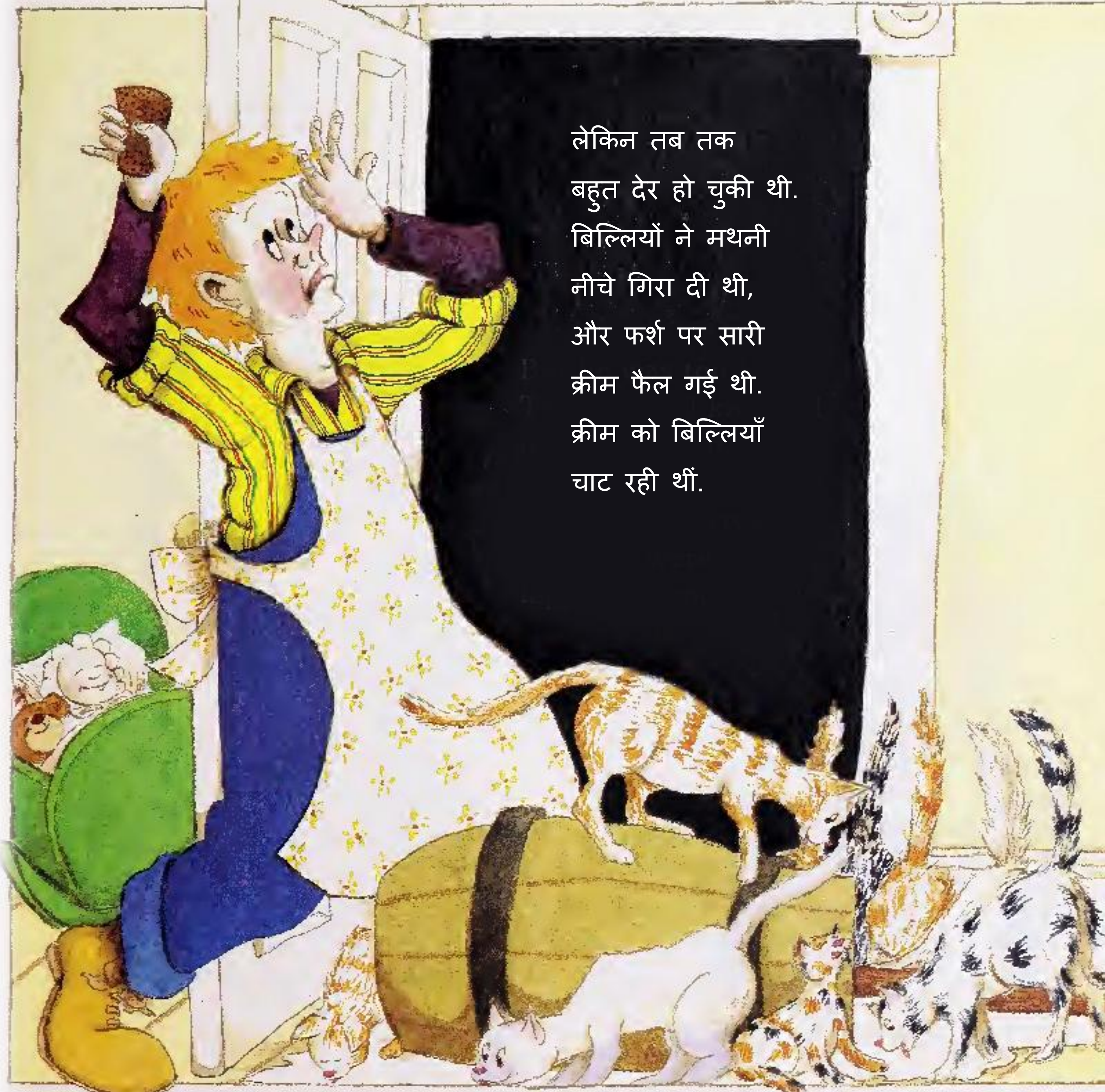


मलाई मथते हुए उसने खुद से कहा:
"मैं यह काम हर दिन कर सकता हूँ.
यह घास काटने से ज़्यादा मज़ेदार है.
लेकिन अब मुझे प्यास लगी है,
इसलिए मैं कुछ ठंडा पियूंगा."
फिर वह तहखाने में
सेब का रस पीने गया.





उसने बैरल का ढक्कन खोला
और बैरल में से अपने मग में रस उंडेला.
अचानक, उसने एक तेज़ आवाज़ सुनी.
फिर वो ढक्कन को हाथ में लेकर
सीढ़ियों से ऊपर भागा.



लेकिन तब तक
बहुत देर हो चुकी थी.
बिल्लियों ने मथनी
नीचे गिरा दी थी,
और फर्श पर सारी
क्रीम फैल गई थी.
क्रीम को बिल्लियाँ
चाट रही थीं.

किसान ने कहा, "कोई बात नहीं.
मैं मक्खन बनाने के लिए और क्रीम ले आऊँगा."
और फिर उसने ऐसा ही किया.





तभी किसान ने अपने हाथ
में बैरल के स्टॉपर को देखा
फिर वह वापस तहखाने में
तेज़ी से भागकर गया.

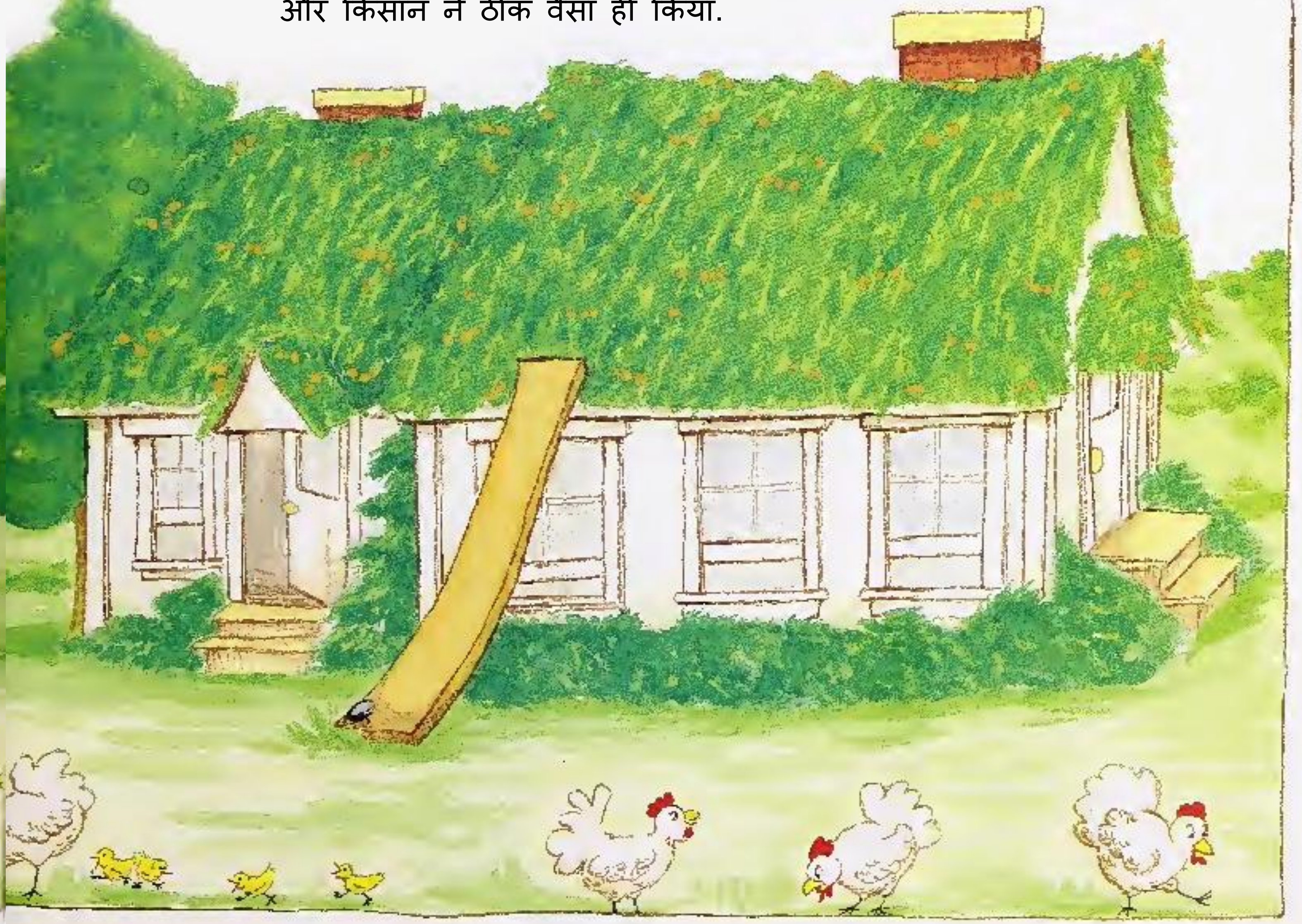
लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी.
बैरल खाली हो चुका था
और सारा सेब का रस फर्श पर फ़ैल चुका था.
फर्श सेब के रस से ढक गया है.
किसान ने कहा, "अच्छा, मैं बाद में फर्श साफ कर दूँगा.
वो कोई बहुत बड़ा काम नहीं है."

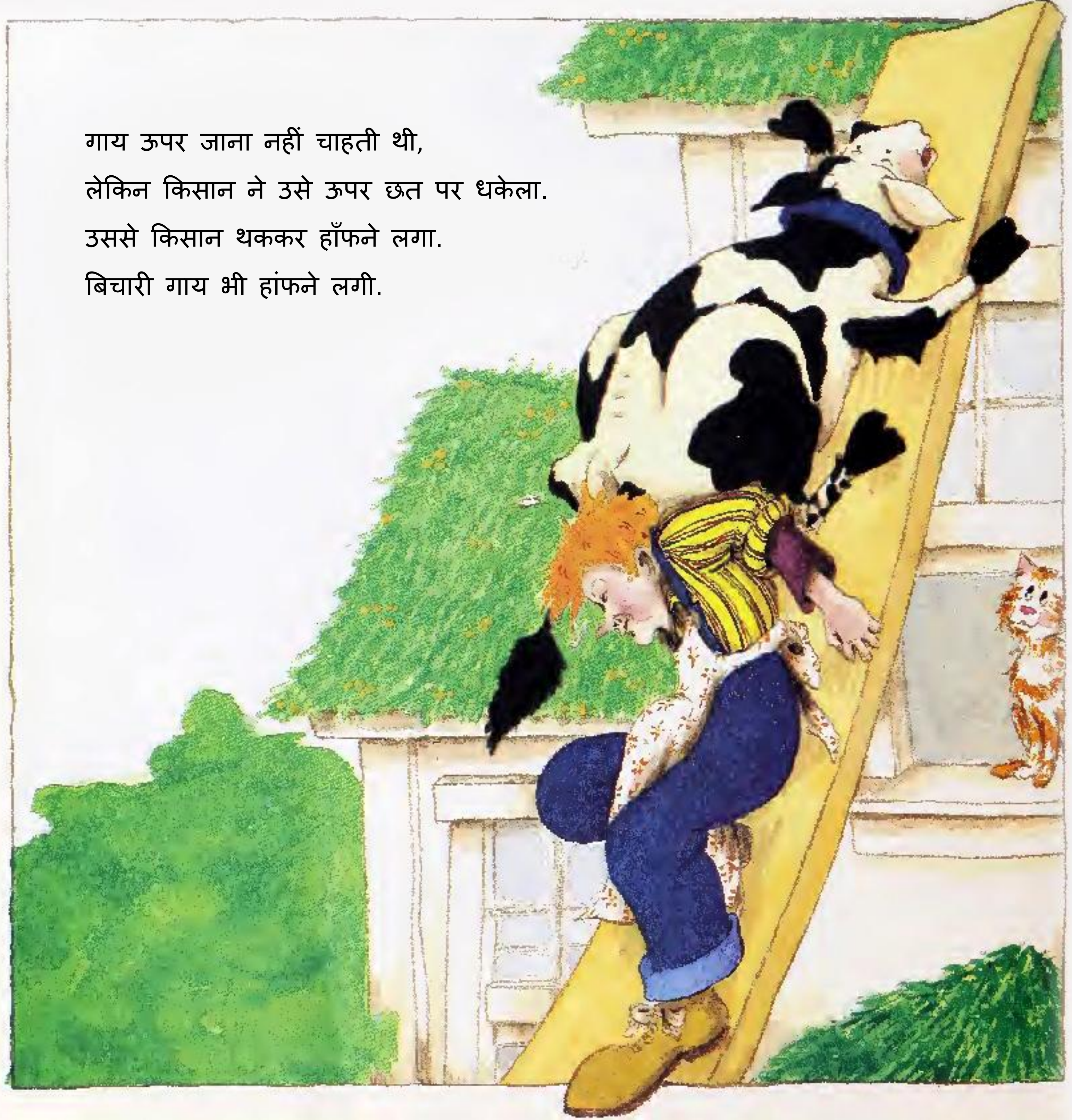


फिर उसे खलिहान में बंधी गाय की याद आई.
गाय ने उस दिन कुछ भी खाया-पिया नहीं था.
किसान ने सोचा, "घास का मैदान बहुत दूर है."
लेकिन घर की छत पर अच्छी घास उगी है,
पूरी छत पर हरी-नरम घास से ढँकी है
- बिल्कुल वैसी जो गाय खाना पसंद करेगी.



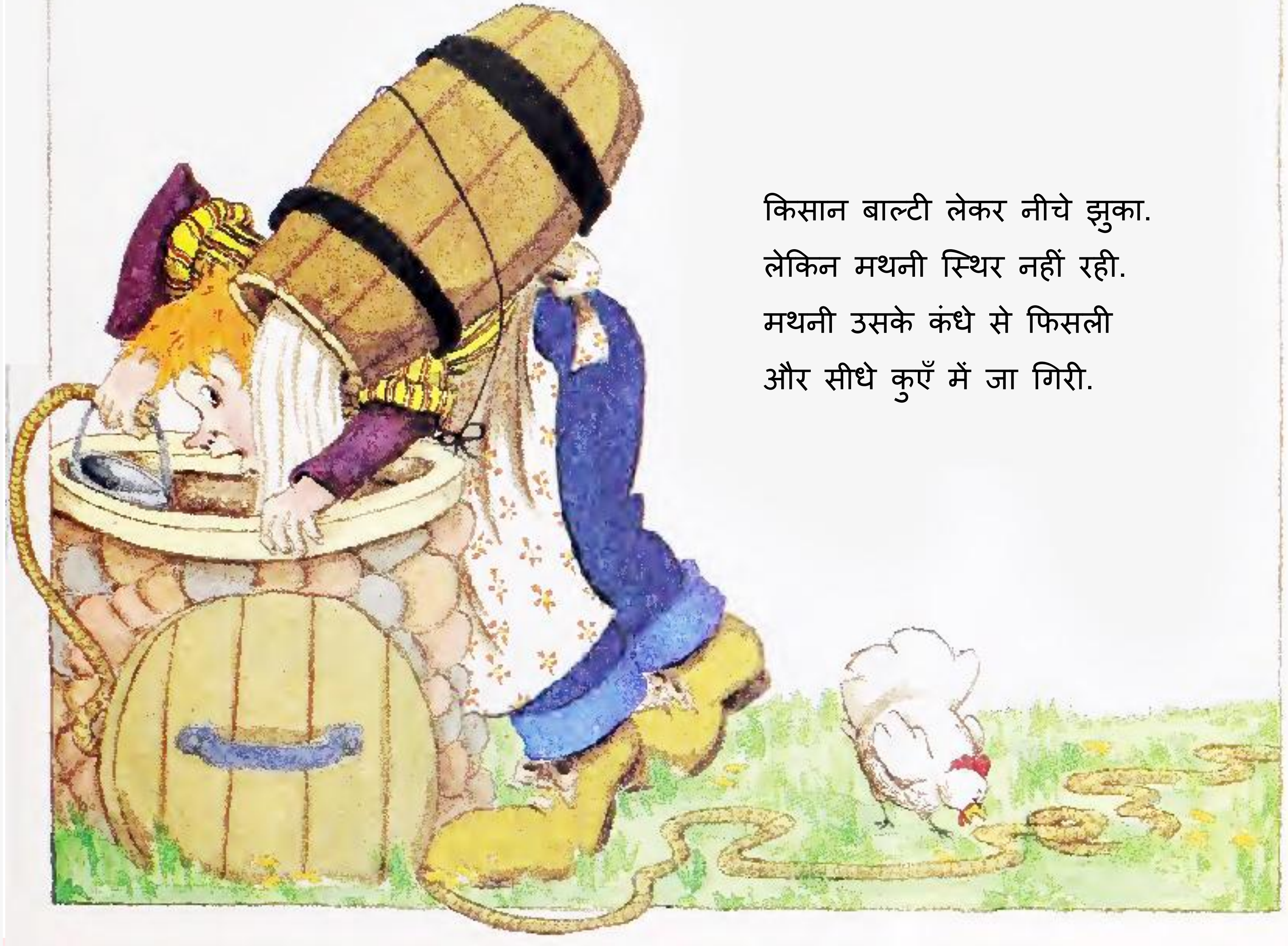
"मैं इस तरह अपना काम आसान बनाऊंगा,"
किसान ने कहा.
"मैं गाय को घर की छत पर चढ़ा दूँगा.
मैं ज़मीन से छत तक एक तख्ता रखूँगा,
फिर गाय ऊपर छत पर चढ़ जाएगी."
और किसान ने ठीक वैसा ही किया.





गाय ऊपर जाना नहीं चाहती थी,
लेकिन किसान ने उसे ऊपर छत पर धकेला.
उससे किसान थककर हाँफने लगा.
बिचारी गाय भी हांफने लगी.

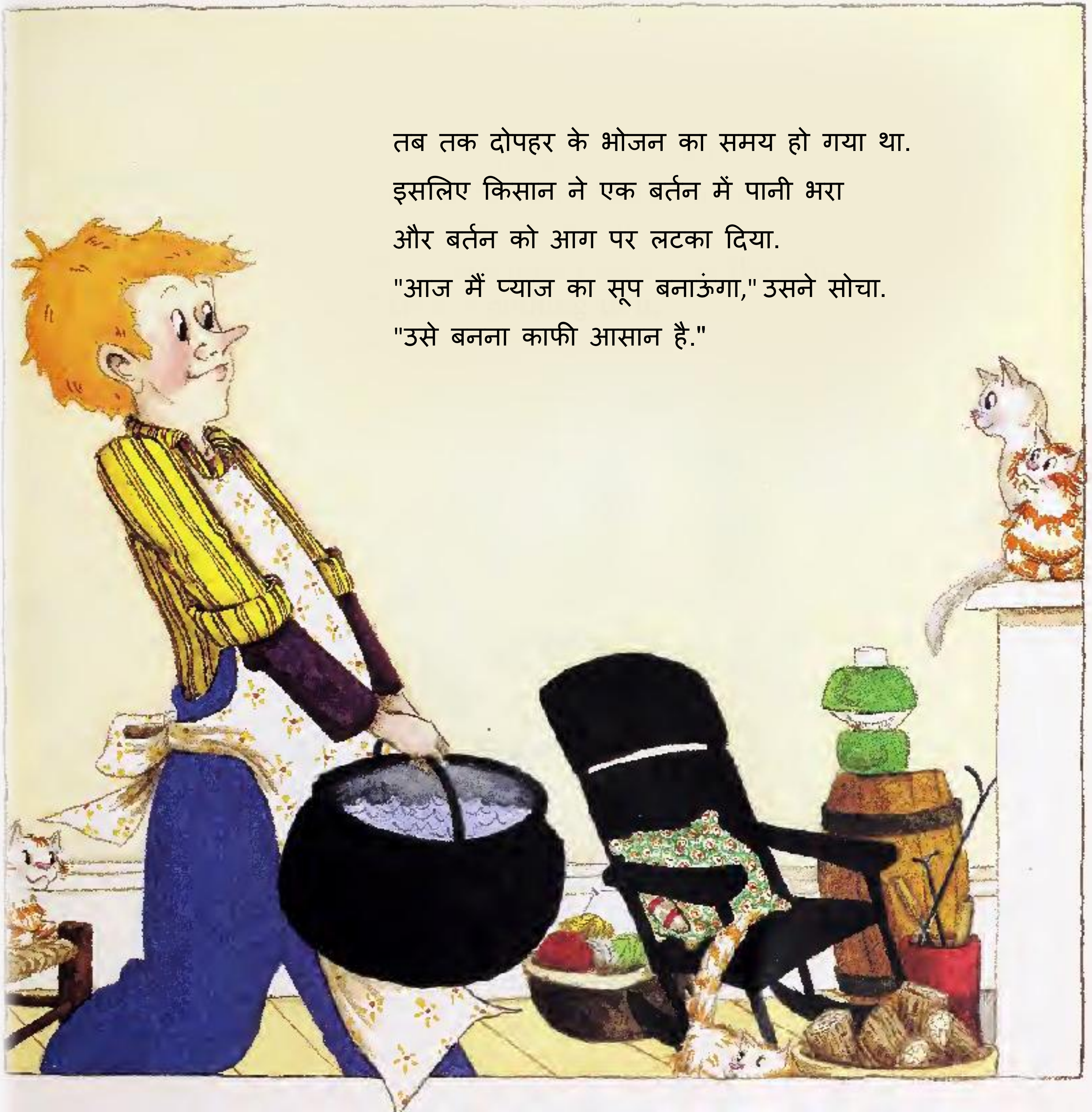
"अब मुझे गाय को पानी पिलाना चाहिए."
लेकिन वह बिल्लियों को मथनी के साथ
अकेला छोड़ने से डर रहा था.
इसलिए उसने मथनी को अपनी पीठ पर रखा
और गाय के लिए पानी लाने कुएँ पर गया.



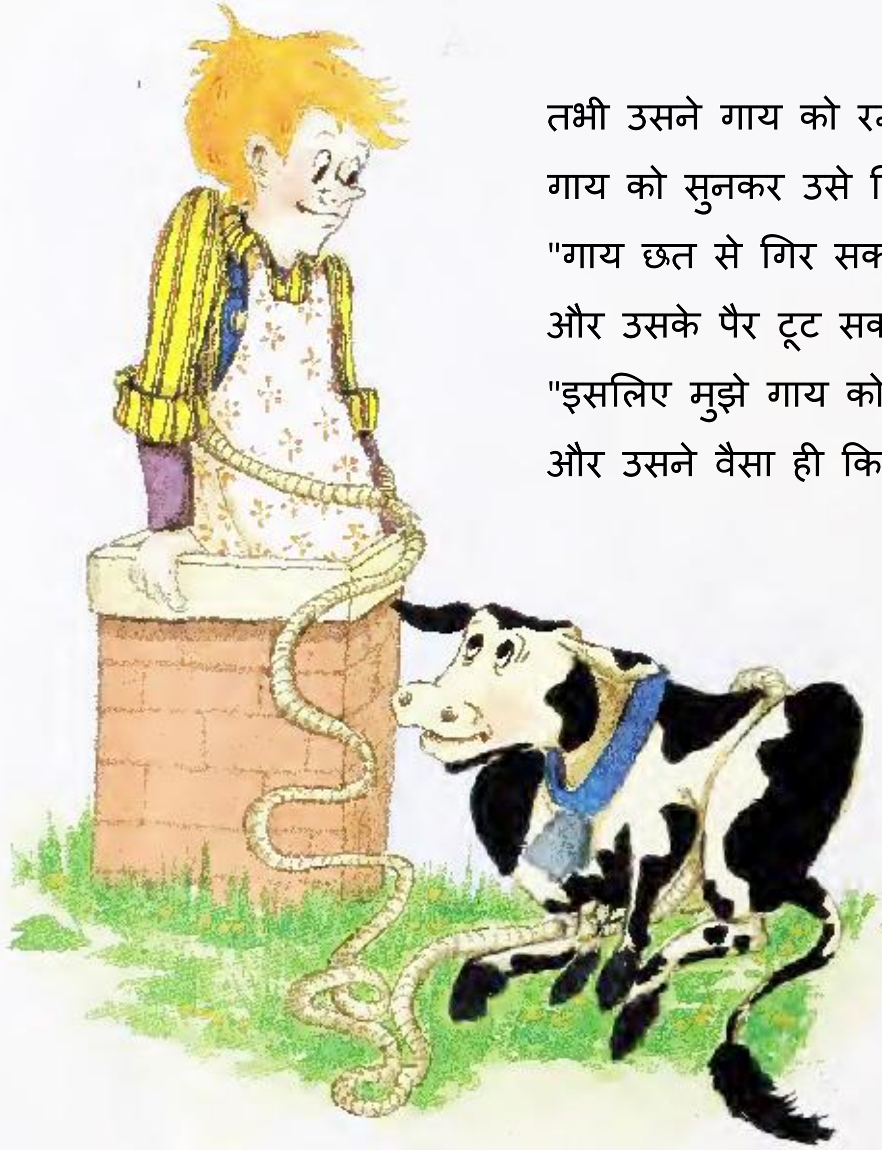
किसान बाल्टी लेकर नीचे झुका.
लेकिन मथनी स्थिर नहीं रही.
मथनी उसके कंधे से फिसली
और सीधे कुएँ में जा गिरी.



"चलो एक दिन मक्खन नहीं सही,"
किसान ने कहा.
"मक्खन की बजाए
हम जैम खा लेंगे.
जैम पहले से ही तैयार है.
चलो, कोई भारी नुक्सान नहीं हुआ."



तब तक दोपहर के भोजन का समय हो गया था.
इसलिए किसान ने एक बर्तन में पानी भरा
और बर्तन को आग पर लटका दिया.
"आज मैं प्याज का सूप बनाऊंगा," उसने सोचा.
"उसे बनना काफी आसान है."



तभी उसने गाय को रम्भाते हुए सुना,
गाय को सुनकर उसे चिंता हुई.
"गाय छत से गिर सकती है
और उसके पैर टूट सकते हैं," उसने सोचा.
"इसलिए मुझे गाय को बांध देना चाहिए."
और उसने वैसा ही किया.

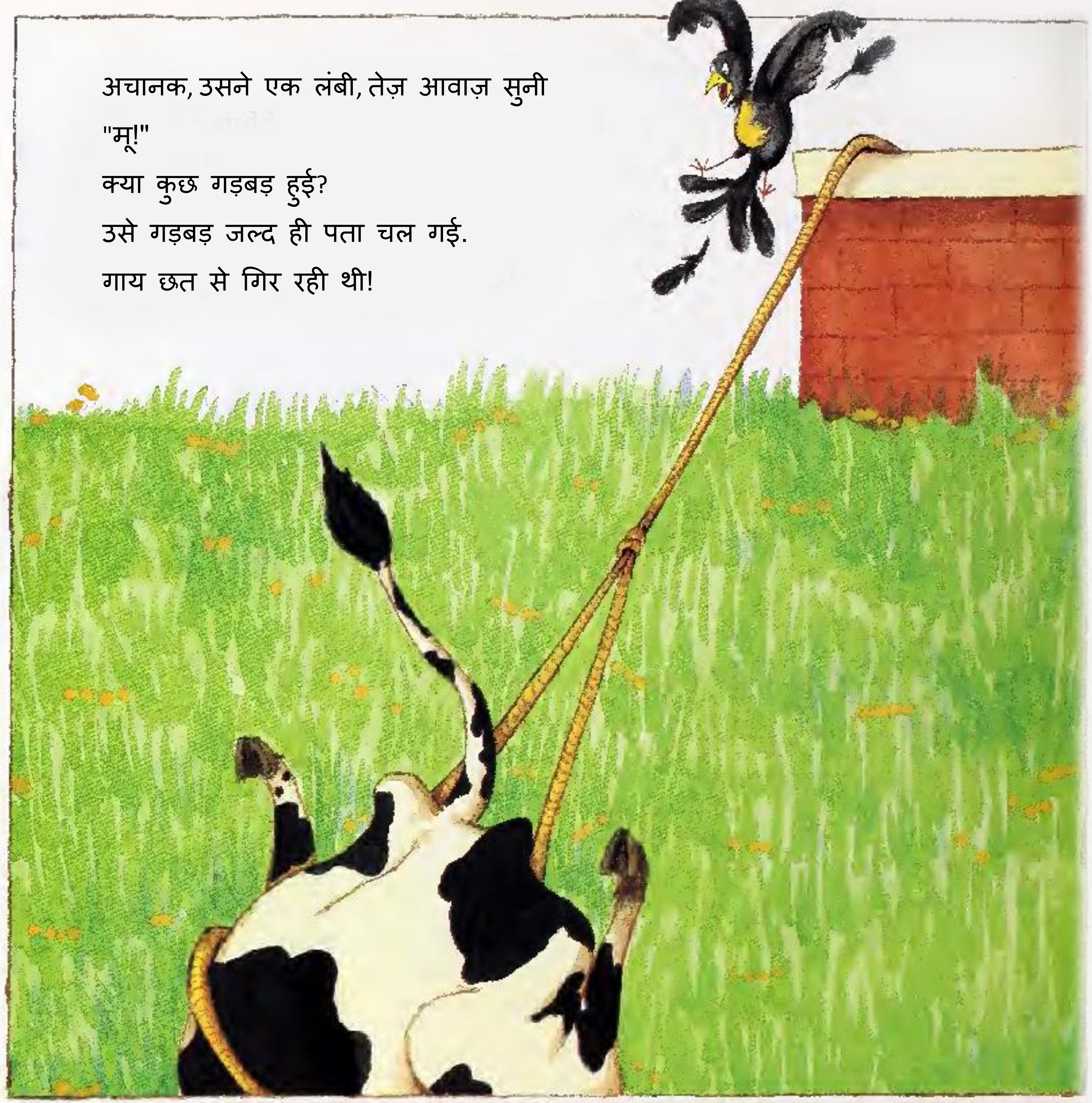
किसान ने रस्सी का एक सिरा
गाय के पेट के चारों ओर बाँधा.
उसने दूसरा सिरा अपनी कमर
के चारों ओर बाँधा.
फिर वह चिमनी से नीचे फिसला
और रसोई में जाकर उतरा.





तब तक बर्तन का पानी गर्म हो चुका था.
इसलिए उसने कुछ प्याज़ काटे
और उन्हें बर्तन में डाल दिए.
"यह करना कौन सी बड़ी बात है,"
उसने कहा.
लेकिन तभी उसे अपने घुटनों में
थोड़ी कमज़ोरी महसूस हुई,
और प्याज़ से उसकी आँखों
से पानी बहने लगा.

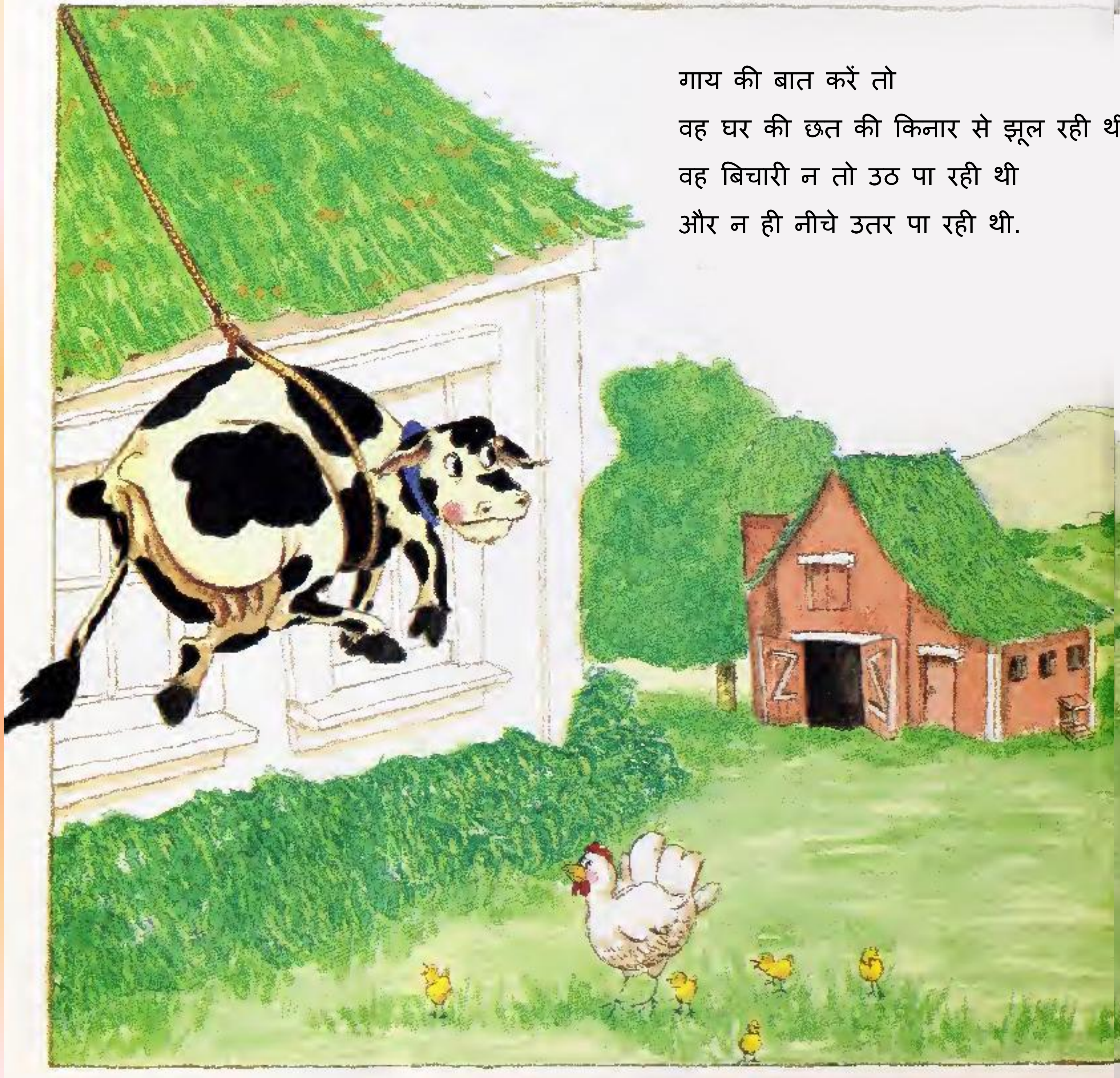
अचानक, उसने एक लंबी, तेज़ आवाज़ सुनी
"मू!"
क्या कुछ गड़बड़ हुई?
उसे गड़बड़ जल्द ही पता चल गई.
गाय छत से गिर रही थी!



और जैसे ही व गाय गिरी,
गाय ने किसान को रस्सी से चिमनी के ऊपर खींचा.
उससे किसान चिमनी में फँस गया.



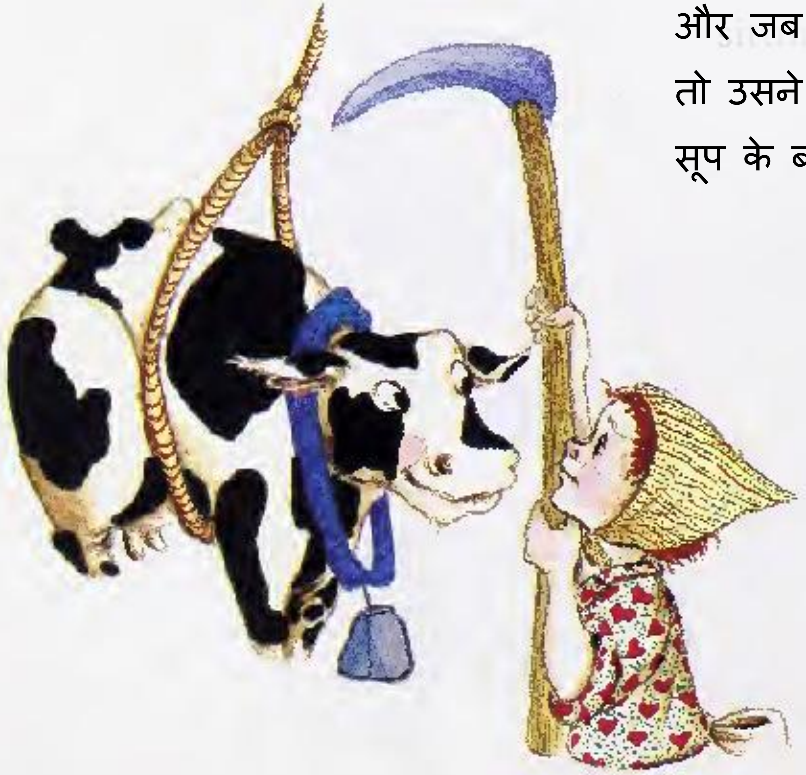
गाय की बात करें तो
वह घर की छत की किनार से झूल रही थी.
वह बिचारी न तो उठ पा रही थी
और न ही नीचे उतर पा रही थी.



इस बीच, पत्नी खेत में काम करती रही.
वह अपने पति के बुलावे का इंतज़ार करती रही.
वो दोपहर के भोजन के बुलावे का इंतज़ार करती रही.
लेकिन वो बुलावा कभी नहीं आया.
"मैंने बहुत देर इंतज़ार किया है," पत्नी ने सोचा.
"अब मुझे सीधे घर जाना चाहिए."
लेकिन जब वह घर पहुँची
तो उसने गाय को धरती और आकाश के बीच लटके हुए देखा.
"बेचारी गाय!" पत्नी ने रोते हुए कहा.

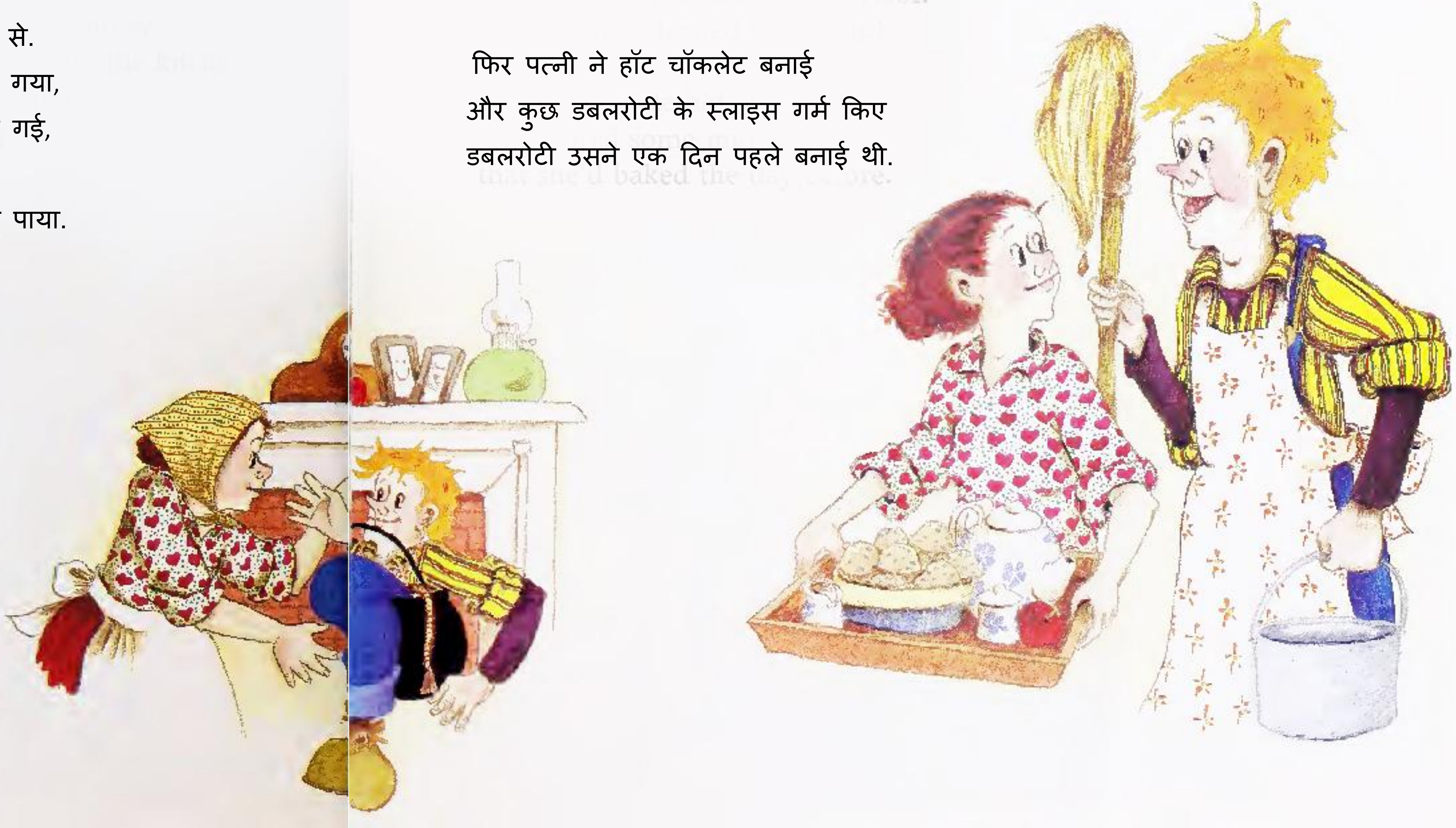


उसने जल्दी से अपनी दरांती से रस्सी काट दी.
गाय नीचे गिर गई.
और किसान भी चिमनी से.
सीधे रसोई में नीचे गिर गया,
और जब पत्नी रसोई में गई,
तो उसने अपने पति को
सूप के बर्तन में बैठे हुए पाया.

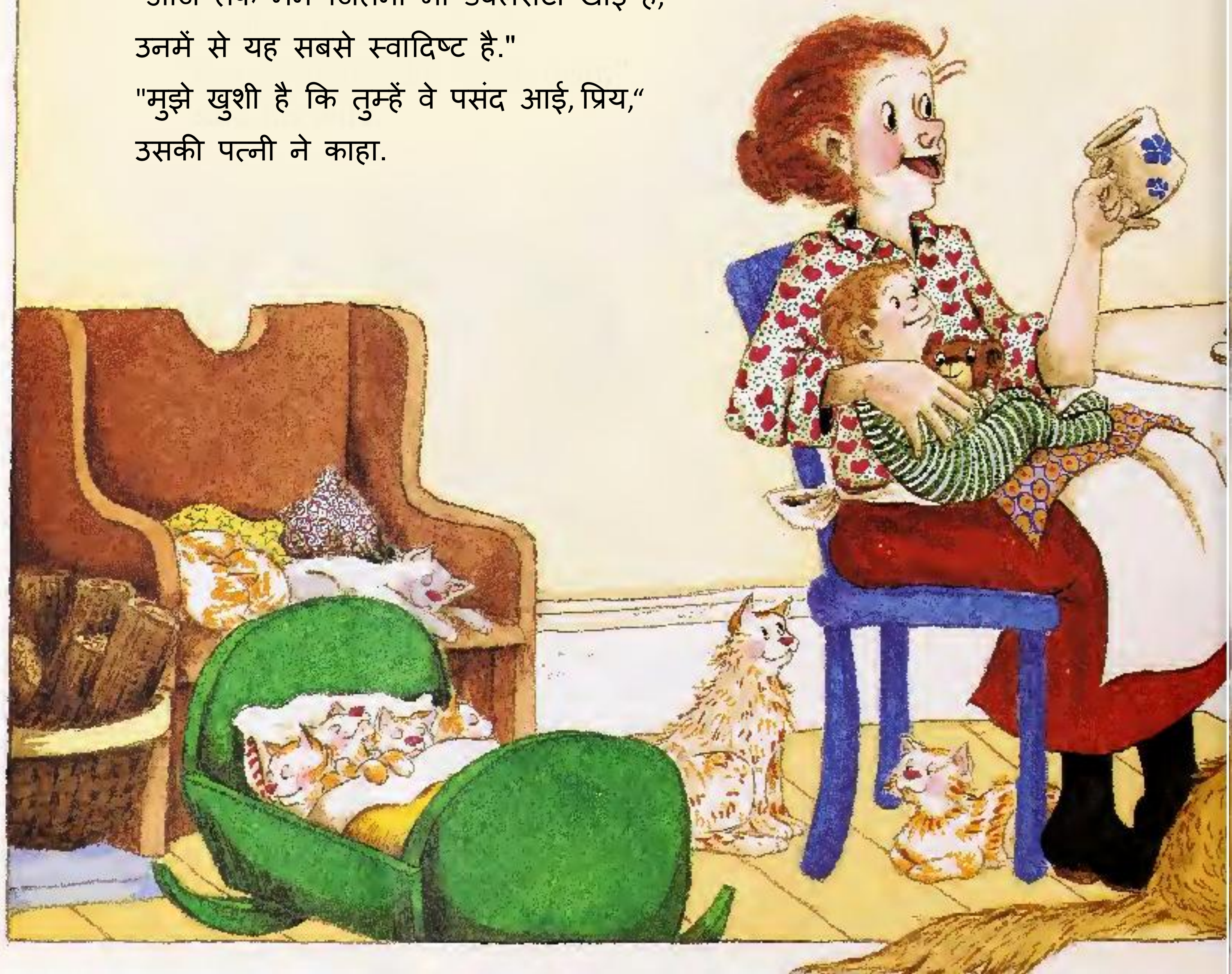


खैर, उसने बर्तन से बाहर निकलने में पति की मदद की.
उसने बच्चे को खाना खिलाया.
फिर वो गाय को वापस खलिहान में ले गई.
उसके बाद उसने रसोई के फर्श को साफ किया.
(किसान ने तहखाना साफ किया.)

फिर पत्नी ने हॉट चॉकलेट बनाई
और कुछ डबलरोटी के स्लाइस गर्म किए
डबलरोटी उसने एक दिन पहले बनाई थी.



उसके पति ने डबलरोटी खाई.
उसने उसके एक...दो...तीन...चार स्लाइस खाए.
"अच्छी डबलरोटी है!" उसने कहा.
"आज तक मैंने जितनी भी डबलरोटी खाई हैं,
उनमें से यह सबसे स्वादिष्ट है."
"मुझे खुशी है कि तुम्हें वे पसंद आई, प्रिय,“
उसकी पत्नी ने काहा.







फिर उस दिन के बाद से,
किसान ने अपनी पत्नी से कभी शिकायत नहीं की.
अगर पत्नी सूप बनाती,
तो उसे सूप पसंद आता.
अगर वह कुकीज़ बनाती,
तो उसे कुकीज़ पसंद आतीं.
और अगर वह केक बनाती,
तो वो ख़ुशी से केक खाता.



मुझे नहीं पता कि तुम इतना सारा काम कैसे करती हो,"
किसान ने अपनी पत्नी से कहा.
"और तुम जो कुछ भी करती हो, वह हमेशा ठीक तरह से करती हो."

